



PROF. (DR.) MAHENDRA PAL

Prof. (Dr.) Mahendra Pal, fondly known as father of Veterinary Mycology in India is a distinguished academician, internationally renowned scientist with outstanding contribution in Veterinary Public Health and Microbiology. He has pioneered and excelled in field of mycology and zoonosis.

2. Born on 10th April, 1946, Prof. (Dr.) Pal obtained B.VSc. and AH, MVPH, Ph.D. and D.Sc. in 1969, 1975, 1981, and 2008 respectively. He has served in Veterinary and Medical Colleges in India and abroad, published over 575 papers and authored 8 books. He elucidated etiologic role of many fungi in various diseases in animals and established prevalence of various fungi in countries across globe. He has collaborated with scientists across globe. He has explored so many unexplored areas of research that many of his research works are first ever authentic scientific literature in respective fields.

3. "First Asian" to be Deputy Editor of International Journal of Medical and Veterinary Mycology (Germany), Prof. (Dr.) Pal is also Honorary Editor in Chief, Editor, Associate Editor and Member of the Editorial Board of many peer reviewed online scientific journals. He has been advisor to many more online scientific publications and is always ready to help research, publication or education even without mention of his name.

4. Prof. (Dr.) Pal is "First Indian Veterinarian" to become JSPS Visiting Scientist at University of Tokyo, Japan. He was awarded Fellow by the National Academy of Veterinary Sciences and also by Korean Society of Veterinary Clinical Medicine, Seoul, South Korea. He has worked in countries like Belgium, New Zealand, and Ethiopia. APRM agar, sunflower seed medium (Pal medium), PHOL stain, and Narayan stain are few of excellent innovative inventions by him. Keeping his determination and faith, he developed and demonstrated culture media from vegetarian ingredients.

5. More than 400 papers of Prof. (Dr.) Pal uploaded on international websites are viewed by 100,000 Scientists of 125 countries. His biography has been published in Who's Who in World, Who's Who in Asia, and Who's Who in Science and Engineering.

6. Prof. (Dr.) Pal is recipient of Distinguished Teacher Award; Jawaharlal Nehru Award, Sandoz Medical Times Prize; Lifetime Achievement Award by Indian Association of Veterinary Public Health; and International Achievement Award to name few. The Indian Association of Veterinary Public Health Specialists has instituted an award in his name "Prof. Mahendra Pal Zoonosis Award".



प्रो. (डॉ.) महेन्द्र पाल

प्रो. (डॉ.) महेन्द्र पाल, जिन्हें भारत में वेटरनरी माइक्रोलॉजी के जनक के रूप में जाना जाता है, एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद, अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने वेटरनरी पब्लिक हेल्थ और माइक्रोबायोलॉजी में उत्कृष्ट योगदान दिया है। उन्होंने माइक्रोलॉजी और जूनोसिस के क्षेत्र में अग्रणी और उत्कृष्ट कार्य किया है।

2. 10 अप्रैल, 1946 को जन्मे प्रो. (डॉ.) पाल ने बी.वी.एससी. और एएच, एमवीपीएच, पीएच.डी. की उपाधियां और डी. एससी क्रमशः 1969, 1975, 1981 और 2008 में प्राप्त की। उन्होंने भारत और विदेशों में पशु चिकित्सा और मेडिकल कॉलेजों में सेवा की है, 610 से अधिक पत्र प्रकाशित किए हैं और 8 पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने जानवरों में विभिन्न रोगों में कई कवक की एटियोलॉजिक भूमिका को स्पष्ट किया और दुनिया भर के देशों में विभिन्न कवक की व्याप्ति को प्रमाणित किया। उन्होंने दुनिया भर के वैज्ञानिकों के साथ सहयोग किया है। उन्होंने अनुसंधान के इतने अनछुए क्षेत्रों की खोज की है कि उनके कई शोध कार्य संबंधित क्षेत्रों में अब तक के सबसे प्रथम प्रामाणिक वैज्ञानिक साहित्य हैं।

3. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मेडिकल एंड वेटरनरी माइक्रोलॉजी (जर्मनी) के डिप्टी एडिटर बनने वाले "पहले एशियाई" प्रो. (डॉ.) पाल कई प्रतिष्ठित ऑनलाइन वैज्ञानिक पत्रिकाओं के मानद एडिटर इन चीफ, एडिटर, एसोसिएट एडिटर और एडिटोरियल बोर्ड के सदस्य भी हैं। वह अनेक ऑनलाइन वैज्ञानिक प्रकाशनों के सलाहकार रहे हैं और अपने नाम का उल्लेख किए बिना भी अनुसंधान, प्रकाशन या शिक्षा में मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

4. प्रो. (डॉ.) पाल जापान के टोक्यो विश्वविद्यालय में जेएसपीएस विजिटिंग साइंटिस्ट बनने वाले "पहले भारतीय पशु चिकित्सक" हैं। उन्हें नेशनल एकेडमी ऑफ वेटरनरी साइंसेज और कोरियन सोसाइटी ऑफ वेटरनरी क्लिनिकल मेडिसिन, सियोल, दक्षिण कोरिया द्वारा फेलोशिप दी गई। उन्होंने बेल्जियम, न्यूजीलैंड और इथियोपिया जैसे देशों में काम किया है। एपीआरएम अगर, सनफलावर सीड मीडियम (पाल मीडियम), पीएचओएल स्टेन और नारायण स्टेन उनके कुछ उत्कृष्ट अभिनव आविष्कार हैं। उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प और विश्वास को बनाए रखते हुए शाकाहारी सामग्री से कल्चर मीडिया को विकसित और प्रदर्शित किया।

5. प्रो. (डॉ.) पाल द्वारा अंतरराष्ट्रीय वेबसाइटों पर अपलोड किए गए 400 से अधिक पेपर 125 देशों के 100,000 वैज्ञानिकों द्वारा देखे गए हैं। उनकी जीवनी हूज़ हू इन वर्ल्ड, हूज़ हू इन एशिया, और हूज़ हू इन साइंस एंड इंजीनियरिंग में प्रकाशित हुई है।

6. प्रो. (डॉ.) पाल को विशिष्ट शिक्षक पुरस्कार; जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार; सैंडोज मेडिकल टाइम्स पुरस्कार; इंडियन एसोसिएशन ऑफ वेटरनरी पब्लिक हेल्थ द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड और इंटरनेशनल अचीवमेंट अवार्ड मिल चुके हैं। इंडियन एसोसिएशन ऑफ वेटरनरी पब्लिक हेल्थ स्पेशलिस्ट्स ने उनके नाम पर एक पुरस्कार "प्रो. महेंद्र पाल जूनोसिस अवार्ड" शुरू किया है।